रात्रि क्लास 12/12/68 :- एक दिन बाहर में भी जावेंगे, चित्र ले जावेंगे और फिर ओपीनियन्स भी अच्छी-2 निकलेंगे। गीता का भगवान कृष्ण नहीं है, गॉड फादर है। फिर तो सर्वव्यापी की बात निकल जाती है; परन्तु पत्थर बुद्धि बिल्कुल ही समझते नहीं। तुम भी पत्थर बुद्धि थे ना। यह है ही फॉरेस्ट ऑफ थौर्न्स। तुम से पूछेंगे तो कहेंगे बन्दर सेना है ना जो रावण पर जीत पहनते हैं श्रीमत पर। बाबा अभी भी भेज सकते हैं बाहर में; परन्तु ऐसा योग्य हैंड है नहीं। विलायत में जाकर कशिश कर हाथ करे ऐसा कोई है नहीं। शिव भगवानुवाच कहते हैं– योगबल नहीं है बच्चों। यह खुद सभी जानते हैं योगबल कम है। कोई का अहंकार चल न सके। बाप सिद्ध कर बतावेंगे ज्ञान बाण में जौहर चाहिए। फिर बाप खुद कहेंगे यह लायक बना है। अभी कोई कहे तो मैं अलाउ नहीं करूँ। योगबल हो और बाप से बहुत प्रीत बुद्धि चाहिए। मूल बात है विनाश काले प्रीत बुद्धि और विनाश काले विपरीत बुद्धि। वह देवताएँ, वह असुर। वह सतयुग के, वह कलियुग के। उन्हों की लड़ाई कैसे हो सकती है? मनुष्यों की बुद्धि कैसी है; परन्तु बाप कहते हैं इस ड्रामा को मैं भी चेंज नहीं कर सकता हूँ। नॉलेज बिल्कुल ही सहज है। अक्षर भी है भगवानुवाच। देह सहित देह के सभी संबंध छोड़ अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो तो सज़ाओं बिगर घर आ जावेंगे, नहीं तो बहुत सज़ा खावेंगे; परन्तु अभी बच्चे प्रबल हैं, माया के वश हैं। जितना योगबल होगा उतना ही माया पर जीत पावेंगे। बाप कहते हैं पुरानी दुनिया स्वाहा हो जावेगी; क्योंकि तुम बच्चों के लिए नई दुनिया ज़रूर चाहिए। ऐसे कोई कह न सके बच्चे अपने लिए राजधानी स्थापन करो। अपने को राजयोग का तिलक देने लायक बनाओ। याद की यात्रा का चन्दन घिसो तो तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। बच्चे समझते हैं इस प्रकार से हम राजाई ले सकते हैं। सिर्फ टाइम लगता है; क्योंकि युद्ध है। आसुरी सम्प्रदाय, दैवी सम्प्रदाय बनने वालों को दुख देते हैं। यह सभी ड्रामा बना हुआ है। टिक-टिक होती रहती है। ड्रामा का चक्र फिरता रहता है। तुम बच्चों को मालूम है कहाँ से टिक-2 चली है, कहाँ तक पहुँचे हो। इसलिए बाबा ने कहा था सेकण्ड का भी हिसाब निकालो। तुम्हारी बुद्धि में सारा ड्रामा चलता रहता है। जो जिसका पार्ट है वही बजाना है, दूसरा कोई बजा न सके। टाइम पास होता जाता है। ऐसा कोई नहीं जो समझे कि यह ड्रामा है। हर 5000 वर्ष बाद यह चलता ही रहेगा। बेहद की घड़ी है। यह लीवर है। बड़ी एक्युरेट है। इस सृष्टि रूपी चक्र को फिरने में 5000 वर्ष लगते हैं। तुम कहेंगे

3 12/12/68

अभी इतना समय पा(स) हुआ। टाइम पूछे कितना बजा है? बोलो, हद का पूछते हो या बेहद का? बेहद की घड़ी में बाकी इतना समय हुआ है। हद का यह टाइम है। बेहद का टाइम यह है। वण्डर खावेंगे। यह वण्डरफुल बातें सीख लो। किसी से पूछना चाहिए, टाइम तो बताना, बेहद का बताना, हद का नहीं। आप नहीं बता सकते हो तो हम बताते हैं। मैं कोई हद का नहीं बताता हूँ, बेहद की घड़ी में 49सौ इतना वर्ष हुआ है। बाकी 5000 पूरा होने में इतना बाकी है। यह वण्डरफुल बातें हैं ना! सारा ड्रामा हूबहू रिपीट होता रहता है। एक बार अनादि शूट किया जाता है वह चलता ही रहता है। इसमें सभी आ जाते हैं। बीमारी आदि का वहाँ नाम-निशान नहीं होगा। वहाँ हरेक चीज़ नई होगी। नए-2 बीमारियाँ तो यहाँ बहुत ही निकलते रहते हैं। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, यह समझाना भी सहज है। यह जानते हैं ना मैं क्या था फिर क्या-2 पार्ट आया हूँ। बच्चों को बाप कहते हैं अपना चार्ट रखो, तो भूल-चूक का मालूम पड़ेगा। कैरेक्टर्स बिगड़ता विकार से है। देवताओं की है ही वायसलेस दुनिया। यह है विषियस वर्ल्ड। दैवी कैरेक्टर्स जिनकी गायन करते हैं ना। बच्चे जानते हैं हम 5000 वर्ष पहले नई दुनिया में देवी-देवता थे। बाजोली खेलते आए हैं। विराट रूप में चोटी दिखाई नहीं है। मुँह और माथा अलग है ना। देवताओं का मुँह दिखाया है माथा की मुख्य है चोटी। आगे चोटी और जनेऊ निशानी होती थी।

यह सभी बातें तुम बच्चों के ख्याल में हैं, आत्मा कितनी छोटी है। इनमें ज़रा भी फर्क पड़ नहीं सकता। आत्माएँ तो सभी एक जैसी हैं ना। आत्मा बिन्दी है बाकी खेल सारा इस शरीर साथ चलता है। बाप कितना वण्डरफुल है! फिर वण्डरफुल है आत्मा! इन सभी आत्माओं का वह फादर है। तो ऐसे-2 पुरुषार्थ के विचार चलते हैं ना। बहुत महीन नॉलेज तुम बच्चों को मिल रही है। सभी से वण्डर है कितनी छोटी सी आत्मा! कितना पार्ट बजा रही है। शरीर भी देखो कैसे बनते हैं। कैसे किस्म-2 के जानवर, जीव-जन्तु आदि होते हैं। इतने बड़े-बड़े होते हैं जो समुद्र से उतर कर उन जानवरों के पीठ पर खाना आदि बनाते हैं और समुद्र से ही कितना खाना मनुष्य खाते हैं। आधा पेट समुद्र से मिलता है। सतयुग में थोड़े ही समुद्र का खाना पड़ेगा। सभी से वण्डरफुल है आत्मा। उनका पार्ट कब पूरा नहीं होता। इसलिए बाप कहते हैं मैं गुह्य-2 वण्डरफुल बातें सुनाता हूँ। स्टूडेंट कब कहते हैं हमको टीचर याद नहीं पड़ता। बच्चे कहते हैं– क्या? कि बाप याद नहीं पड़ता। यहाँ है माया जो बच्चों को बाप भुलाती है, स्टूडेंट को टीचर भुलाती है, फॉलोअर्स को गुरु भुलाती है। माया तीनों को भुला देती है। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

बाप ने समझाया है मैं हूँ एक बहुत बड़ा बेहद का बागवान। तो तुम जानते हो इस बागवान को अपने बगीचे को देख कितनी खुशी होती होगी। अनेक किसम के बगीचे आते हैं। इनमें हर प्रकार के फूल होते हैं। कोई गुलाब के, मोतिये की, कोई चम्पा की, कोई टांगर, कोई अक के भी फूल हैं। तो बागवान की नज़र किस पर जाएगी? ज़रूर गुलाब के फूल पर ही जावेगी। हाँ, यह भी जानते हैं सभी प्रकार के फूल मेरे सामने बैठे हैं तो क्या अक के ऊपर नज़र जाएगी, अक को प्यार करेंगे? नहीं। वहाँ से प्यार हटकर जो गुलाब का फूल होगा वहाँ जाकर पड़ेगी। इसलिए बाप समझाते हैं बच्चे कोई भी गफ़लत मत करो। हर बात में श्रीमत पर चलो। किसी प्रकार का लोभ आदि भी मत करो। लोभ भी नुकसानकारी है। तुम बाप से पूछ सकते हो यह धंधा करें, इससे यज्ञ को फायदा है, इससे यज्ञ को मदद मिल सकती है? तो बाप कहेंगे करो या न करो। पर श्रीमत तो लेनी है ना। तो कोई भी बात में बच्चों को गफलत नहीं करनी चाहिए। कोशिश करना चाहिए गुलाब का फूल बन बाप का प्यार को खैंच सके, लवली स्वीटेस्ट बाप की प्यार को कशिश कर सकें। जितना बाप को कशिश करेंगे उतना बाप भी कशिश करेंगे ना। अच्छा।